प्रश्न: रूपये की परिवर्तनीयता क्या है? भारत द्वारा पूंजी खाते में रूपये की परिवर्तनीयता क्यों नहीं की जा सकी है? (250 शब्द)

उत्तर:

रूपये की परिवर्तनीयता का अर्थ ऐसी व्यवस्था से लगाया जाता है जिसमें देश की मुद्रा मुक्त रूप से प्रमुख विदेशी मुद्राओं में तथा प्रमुख विदेशी मुद्राएं मुक्त रूप से स्थानीय मुद्रा में परिवर्तनशील होती हैं। रूपये की परिवर्तनीयता चालू खाता एवं पूंजी खाता में होती है। चालू खाते में रूपये की पूर्ण परिवर्तनीयता भारत में 19 अगस्त, 1994 से लागू है।

पूंजी खाते में रूपये की परिवर्तनीयता की परिभाषा देते हुए एस. एस. तारापोर समिति ने कहा है कि पूंजी खाते की परिवर्तनीयता का तात्पर्य बाजार निर्धारित विनिमय दर पर घरेलू वित्तीय परिसंपत्तियों को विदेशी परिसंपत्तियों में परिवर्तित करने की स्वतंत्रता से है। इसका संबंध घरेलू या विदेशी परिसंपत्तियों के स्वामित्व तथा लेनदारियों के आकार में परिवर्तन से है, जो कि एक देश और शेष विश्व के मध्य होता है। पूंजी खाते की परिवर्तनीयता अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष की धारा (xiii) से संबंधित है। उदारीकरण के उद्देश्यों से संबंधित विदेशी मुद्रा विनिमय के नियमों को आधुनिक बनाने के तहत रूपये की पूंजी खाते में परिवर्तनीयता आवश्यक है।

पूंजी खाते में रूपये की परिवर्तनीयता हेतु समयबद्ध उपाय सुझाने के लिए एस. एस. तारापोर समिति का गठन किया गया था, जिसने अपनी रिपोर्ट मई, 1997 में प्रस्तुत की। समिति की मुख्य बातें निम्नांकित हैं –

- रूपये की पूंजी खाते पर परिवर्तनीयता कार्यक्रम चरणबद्ध तरीके से तीन वर्षों (1997-2000) तक किया जाये।
- राजकोषीय घाटा सकल घरेलू उत्पाद का 3.5% होना चाहिए।
- पूंजी के अंतर्प्रवाह एवं बहिर्प्रवाह के संबंध को उदारीकरण की सुविधा दी जाये।
- मुद्रास्फीति की दर 3% से 5% के बीच होनी चाहिए।
- ब्याज दरों की प्रणाली को पूर्णतः नियंत्रण मुक्त कर दिया जाये।
- चालू खाते की घाटा को 1.6% तक लाया जाये।
- विदेशी विनिमय कोष कम से कम 26 अरब डॉलर होना चाहिए।
- ऋण शोधन अनुपात 20% पर लाया जाये।

रूपये की पूंजी खाते में परिवर्तनीयता हेतु सुझाए गये उपर्युक्त तथ्यों में से अभी तक भारत द्वारा बहुत सारे तथ्यों को पूरा नहीं किया जा सका है। इसलिए पूंजी खाते में रूपये की परिवर्तनीयता अभी तक नहीं हो सकी है। अतः सरकार द्वारा इस दिशा में कार्य किये जाने की आवश्यकता है।

M 19/02/24